शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. X, No. 1, pp (263-269), Jan-March 2019 

# विवेकानन्द के चिन्तन में राज्य और समाज की संकल्पना

डॉ. विक्रम सिंह
*सहा0 प्राध्या0, राजनीति विज्ञान विभाग*
*ब्राइटमून गर्ल्स पी.जी. कॉलेज,*
*गोविन्दगढ़, जयपुर (राज.)*
*इमेल* drvikramdevpura@gmail.com

## सारांश

*विवेकानन्द की कृतियों में राजनीतिक चिन्तन की समीक्षा के तहत स्वयं विवेकानन्द ने भिन्न–भिन्न परिस्थितियों तथा घटना क्रम के परिप्रेक्ष्य में किस प्रकार, क्या अभिव्यक्ति की, इस महत्वपूर्ण प्रचार को परखने का प्रयास किया गया है। विवेकानन्द के लेखन, व्याख्या, मूल्यांकन अपेक्षित मात्रा में उपलब्ध है, किन्तु उनकी कृतियों पर केन्द्रित अध्ययन की– चाहे कितने भी परिसीमित हो, किसी भी सुधारवादी एवम् कर्मण्य व्यक्ति का एक विषिश्ट समय संदर्भ होता है एवम् उसी को दृष्टिगत रखकर मूल्यांकन एवम् समीक्षा संभव एवम् सामयिक बन सकते है।*

*विगत शताब्दी, वर्तमान शताब्दी के कतिपय प्रारम्भिक वर्ष, अंग्रेजी शासन का स्वरूप भारत की तत्कालीन अवस्था में समाज एवम् धर्म विषयक प्रवृत्तियां एवम् संरचना, इन सभी के वृहत परिप्रेक्ष्य में विवेकानन्द के चिन्तन में सुधारवादी दृष्टि, मूल्य, आकांक्षाएं, विकल्प तथा अन्तर दृन्द्ध को परखा जा सकता है।*

*विवेकानन्द के सामाजिक निष्कर्ष, अगणित संतों और ऋषियों के शाश्वत आध्यात्मिक अनुभवों पर आधारित है। उन्होंने अवयवी विकास, राष्ट्रीय उन्नति तथा मानसिक और आध्यात्मिक स्वतंत्रता पर बल दिया। आज इस समय समन्वय प्रतिपादक व्यापक सामाजिक और राजनीतिक दर्शन की आवश्यकता है। भौतिक जगत की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। पूँजीवादी शोषण का अंत होना चाहिए और आर्थिक समानता को सामाजिक आदर्श बनाया जाना चाहिए। किन्तु आर्थिक सुरक्षा की प्राप्ति के उपरान्त विष्व की संस्कृति और उसकी आत्मा के अधिक पूर्ण विकास के लिए तथा मानव संबंधों को अधिक समुचित रूप से नैतिक नींव पर स्थापित करने के लिए हमें वेदान्त की उन शिक्षाओं से प्रेरणा लेनी पड़ेगी, जिसके आधुनिक प्रतिपादक स्वामी विवेकानन्द थे।*

## प्रस्तावना

कलकत्ता के एक प्रसिद्ध कुलीनतंत्री, दत्त**'बंगाली कायस्थ'** परिवार में विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी, 1863 ई. सोमवार के दिन प्रातःकाल सुर्योदय के किंचित काल बाद हुआ था। उनका जन्मजात नाम नरेन्द्र नाथ था। उनकी माता भुवनेश्वरी देवी एक विदुषी महिला थी, जो

अपनी अभूतपूर्व स्मृति और ईश्वर भक्ति के लिए प्रख्यात थी। उनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त कलकत्ता हाईकोर्ट के प्रसिद्ध वकील थे। अपने पिता से विवेकानन्द ने विचार शक्ति, कलात्मक अनुभूति एवम् दया की शिक्षा ली। उनके पिता एक सहज संशयवादी थे। नरेन्द्र नाथ को उन्होंने **'न्यूटेस्टामेन्ट'** एवम् **'ओल्ड टेस्टामेन्ट'** की प्रेरणा देते हुए कहा कि कोई धर्म है तो वह इन पुस्तकों में है। बी.एन. दत्त ने इसलिए माना कि जिस प्रकार कार्लमार्क्स, संकीर्ण यहूदी दृष्टिकोण की परिधि से मुक्त होने के प्रयासों हेतु अपने पिता के प्रति कृतज्ञ थे। उसी प्रकार विवेकानन्द भी मध्ययुगीन दृष्टिकोण एवम् अन्धानुकरण के अपने विरोध एवम् विकल्प प्रस्तुतिकरण हेतु अपने पिता के ऋणी थे।[1]

वे विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थी थे। प्रखर प्रज्ञा द्वारा – विज्ञान ज्योतिष, गणित, दर्शन, भारतीय एवम् यूरोपीय भाषाओं पर उनको अधिकार प्राप्त हुआ। उन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी का काव्य पक्ष तथा ग्रीन और गिबन के इतिहास ग्रन्थों का मनन किया। फ्रांसिसी क्रांति एवम् नेपोलियन से वे प्रभावित हुए। चिन्तन आलोचना एवम् विवेचन की इस प्रवृत्ति के कारण ही उनको 'विवेकानन्द' कहा गया।[2]

## विवेकानन्द के चिन्तन में राज्य और समाज की संकल्पना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस प्रकार समाज और राज्य के अभाव में मानव का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता है। इनके अभाव में मानव जीवन की कल्पना असम्भव है। ये दोनों संस्थाए सभ्य जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। जो मनुष्य समाज अथवा राज्य के बिना रह सकता है, वह मनुष्य नहीं पशु है। सम्भवतः समाज और राज्य के इसी महत्व को ध्यान में रखते हुए युनानी दार्शनिक अरस्तु ने मानव को एक सामजिक अथवा राजनैतिक प्राणी घोषित किया था और कहा था कि जो व्यक्ति इनके बिना रह सकता है, वह पशु अथवा देवता है।

स्वामी विवेकानन्द एक अध्यात्मवादी और महान् सर्जनात्मक विभूति थे; भारत के नैतिक तथा सामाजिक पुनरूद्धार के लिए उन्होंने एक अनुप्रेरित कार्यकर्ता के रूप में अपना सम्पूर्ण जीवन खपा दिया। उन्होंने अपने चिन्तन में देश और समाज के सामने जो व्यवहारिक विसंगतियां तथा समस्याएं थी, उनकी ओर उन्होंने पूरा ध्यान दिया है।

## राष्ट्रवाद

हेगेल की भांति विवेकानन्द का भी विश्वास था कि प्रत्येक राष्ट्र का जीवन किसी एक प्रमुख तत्व की अभिव्यक्ति है, ''प्रत्येक राष्ट्र का अपना तत्व है, अन्य सब वस्तुएं गौण होती है। भारत का तत्व धर्म है, समाज सुधार तथा अन्य कुछ गौण है।'[3]

इसलिए उन्होंने राष्ट्रवाद के एक धार्मिक सिद्धांत की नींव का निर्माण करने के लिए कार्य किया, आगे चलकर उसी सिद्धांत का विपिनचन्द्र पाल तथा अरविन्द ने समर्थन और पक्ष पोषण किया। विवेकानन्द ने राष्ट्रवाद के धार्मिक सिद्धांत का प्रतिपादन इसलिए किया कि वे समझते थे कि आगे चलकर धर्म ही भारत के राष्ट्रीय जीवन का मेरूदण्ड बनेगा।[4]

उनका कहना था कि राष्ट्र की भावी महानता का निर्माण उसके अतीत की महत्ता की नींव पर ही किया जा सकता है। अतीत की उपेक्षा करना राष्ट्र के जीवन का ही निषेध करने

के समान है। उसका अर्थ तो वास्तव में उसके अस्तित्व को ही अस्वीकार करना है। इसलिए भारतीय राष्ट्रवाद का निर्माण अतीत की ऐतिहासिक विरासत की सुदृढ़ नींव पर ही करना होगा। विवेकानन्द कहा करते थे कि अतीत में भारत की सृजनात्मक प्रतीभा की अभिव्यक्ति मुख्यतः धर्म के क्षेत्र से ही हुई थी। धर्म ने भारत में एकता तथा स्थिरता को बनाये रखने के लिए एक सृजनात्मक शक्ति का काम किया था, यहां तक कि जब कभी राजनीतिक सत्ता शिथिल और दुर्बल हो गई तो धर्म ने उसकी भी पुनः स्थापना में योगदान दिया है। इसलिए विवेकानन्द ने घोषणा की कि राष्ट्रीय जीवन का धार्मिक आदर्शों के आधार पर संगठित किया जाना चाहिए।[5]

स्वामी के अनुसार शिक्षा का ध्येय राष्ट्रीय गौरव का विकास करना है, वे लिखते है ''हे वीर साहस का कार्य करो। गर्व से कहो, मैं भारतवासी हूँ और प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है। तुम चिल्लाकर कहो, मुर्ख भारतवासी ब्राहम्ण भारतवासी, चाण्डाल भारतवासी, सभी मेरे भाई है। भारत के दीन दुखियों के साथ एक होकर गर्व से पुकार कर कहो– प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है। भारतवासी मेरे प्राण है। भारत के देवी–देवता मेरे ईश्वर है, भारत का समाज मेरे बचपन का झूला, जवानी की फुलवारी और बुढ़ापे की काशी है। भाई कहो कि भारत की मिट्टी मेरा स्वर्ण है, भारत का कल्याण मेरा कल्याण है, और रात–दिन तुम्हारी यही रट लगी रहे, हे गौरीनाथ, हे जगदम्बे मुझे मनुत्त्व दो। मां मेरी दुर्बलता तथा पुरूशता दूर कर दो। मां मुझे मनुष्य बना दो।''[6]

कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया' ने लिखा है कि विवेकानन्द ने धर्म की प्रवृत्ति से युक्त राष्ट्रवाद का उपदेश दिया।

वर्तमान में भी राष्ट्रवाद को और लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए और प्रत्येक भारतवासी का कल्याण करने के लिए उनकी विचारधारा को यथावत लागू किया जाना चाहिए।

**स्वाधीनता के पक्षपाती**

स्वामी विवेकानन्द की दूसरी महत्वपूर्ण देन थी स्वतंत्रता। उनकी स्वतंत्रता विषयक अवधारणा बहुत व्यापक थी। उनका कहना था कि सम्पूर्ण विश्व अपनी अनवरत गति के द्वारा मुख्यतः स्वतंत्रता की खोज कर रहा है। वे स्वतंत्रता के प्रकाश को वृद्धि की एकमात्र शर्त मानते थे। ''शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक स्वतंत्रता की ओर अग्रसर होना तथा दूसरो को उसकी ओर अग्रसर होने में सहायता देना मनुष्य का सबसे बड़ा पुरस्कार है। जो सामाजिक नियम इस स्वतंत्रता के विकास में बाधा डालते है, वे हानिकारक है, और उन्हें शीघ्र नष्ट करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। उन संस्थाओं को प्रोत्साहन किया जाये, जिसके द्वारा मनुष्य स्वतंत्रता के मार्ग पर आगे बढ़ता है।[7]

विवेकानन्द आध्यात्मिक स्वतंत्रता अथवा माया के बन्धनों और प्रलोभनों से मुक्ति के ही समर्थक नहीं थे, बल्कि वे मनुष्य के लिए भौतिक तथा बाह्य स्वतंत्रता भी चाहते थे। वे मनुष्य के प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धांत को मानते थे। उनका कथन हैः ''स्वतंत्रता का निश्चय ही यह अर्थ नहीं है कि यदि मैं और आप किसी की सम्पत्ति को हड़पना चाहे तो हमें ऐसा करने से न रोका जाये, किन्तु प्राकृतिक अधिकारों का अर्थ यह है कि हमें अपने शरीर, बुद्धि और धन का प्रयोग अपनी इच्छानुसार करने दिया जाये और हम दूसरों को हानि न पहुँचाएं और समाज के

सभी सदस्यों को धन, शिक्षा तथा ज्ञान प्राप्त करने का समान अधिकार हो'' ।[8]

स्वामी विवेकानन्द का अनुरोध था कि सब व्यक्तियों को अपने में पुरूषत्व, मानव गरिमा तथा सम्मान की भावना आदि श्रेष्ठ गुणों का विकास करना चाहिए।

## लोकतंत्र तथा समाजवाद के समर्थक

स्वामी विवेकानन्द लोकतंत्र तथा समाजवाद के प्रबल समर्थक थे। वे व्यक्ति के विकास के लिए स्वतंत्र अवसर देना चाहते थे। विवेकानन्द कहते है कि स्वाधीनता ही विकास की पहली शर्त है। यदि कोई यह कहने का दुःसाहस करे कि मैं इस नारी का, इस बालक का उद्धार करूंगा, तो यह गलत है। हजार बार गलत है। दूर हट जाओ, यह अपनी समस्याओं को स्वयं हल कर लेंगे। तुम सर्व ज्ञाता का दम भरने वाले होते कौन हो? तुम में ऐसे दुःसाहस का विचार कैसे आया कि ईश्वर पर भी तुम्हारा अधिकार है। क्या तुम नहीं जानते कि प्रत्येक आत्मा ईश्वर का ही स्वरूप है। हर एक को भगवत स्वरूप समझो। तुम केवल सेवा कर सकते हो। प्रभु की संतान की सेवा करो—जब कभी तुम्हें अवसर मिले, यदि प्रभु की इच्छा से तुम उनकी किसी संतान की सेवा कर सको तो सचमुच तुम धन्य हो। तुम धन्य हो कि वह सौभाग्य तुम्हें प्राप्त हुआ और दूसरे उससे वंचित रहे। इस कार्य को पूजा की भावना से करो।[9]

## समाज विश्लेषण

स्वामी विवेकानन्द वैदिक संस्कृति की वर्ण व्यवस्था को सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण मानते है, यद्यपि समय के साथ—साथ उसमें अनेक दोष आ गये है। स्वामी जी का कहना है— 'हमारा विश्वास है कि भारतीय वर्ण व्यवस्था भगवान द्वारा मनुष्य को दी गई सर्वोत्कृष्ट सामाजिक व्यवस्थाओं में से एक हैं। हमारा यह भी विश्वास है कि यद्यपि अनिवार्य त्रुटियों ने विदेशी बाधाओं और उपद्रवों ने तथा सर्वाधिक रूप में, जो ब्राहम्ण की अपाधि के योग्य भी नहीं है, ऐसे अनेक ब्राहम्णों के अतिशय अज्ञान और मिथ्याभिमान ने अनेक प्रकार से इस परमगौरवमय भारतीय व्यवस्था को समुचित रूप से सफल होने में बाधा पहुँचायी है और उसे कुंठित कर दिया है, फिर भी इस व्यवस्था ने भारत का अद्भुत कल्याण किया है और निश्चय ही भारतीय मानव जीवन को अपने लक्ष्य तक पथ प्रदर्शन करने का श्रेय इस व्यवस्था के भाग्य में है।[10]

स्वामी विवेकानन्द वर्ण व्यवस्था का आधार गुण, कर्म एवम् स्वभाव मानते हैं, धन सम्पत्ति नहीं। स्वामी जी कहते है कि हमारे यहां गुण और जन्म के आधार पर जाति बनती है, धन के आधार पर नहीं। मनुष्य के पास कितनी भी दौलत क्यों न हो, उससे भारत में कोई उच्चता प्राप्त नहीं होगी। जाति में सबसे गरीब और सबसे धनी बराबर माने जाते है। यह उसकी सर्वोत्तम विशेषताओं में से एक है। ब्राहम्ण का जन्म ईश्वरोपासना के लिए हुआ है। जितना उच्चत्तर वर्ग होगा, उतने ही अधिक से समाज के प्रति कर्त्तव्यों का निर्वाह करना पड़ेगा। वर्ण व्यवस्था ने हमें राष्ट्र के रूप में जीवित रखा है और यद्यपि इसमें बहुत से दोष है पर उनसे भी अधिक इससे लाभ है।[11]

स्वामी विवेकानन्द सच्चे देशभक्त थे। उनको भारतीय समाज की गिरती हुई दशा को देखकर समाज में व्याप्त हुई कुरीतियों को देखकर बड़ा दुःख होता था। वे भारतीय समाज की

बुराइयों को दूर करके एक श्रेष्ठ समाज की स्थापना करना चाहते थे।

## अस्पृश्यता का विरोध

स्वामी विवेकानन्द जी अपने एक भाषण में भारत के इस अभिशाप के संबंध में बड़े दुःख और शोक के साथ कहा था कि हम हिन्दू भी नहीं और वेदान्तिक भी नहीं। असल में हम है छुआ–छूत पंथी। रसोई घर हमारा मंदिर है। पकाए जाने वाले बर्तन उपास्य देवता है और मत छुओ, मत छुओ हमारा मंत्र है। समाज के इस अंध कुसंस्कार को शीघ्र दूर करना होगा और वह एक मात्र उपनिषदों के उदार मतों द्वारा ही हो सकता है।[12]

## स्त्री जाति का उद्धार

स्वामी विवेकानन्द स्त्रियों को बड़ी आदर की दृष्टि से देखते थे। वे प्रत्येक को माँ–बहन के रूप में पूजते थे। उस समय स्त्रियों की दशा कीड़ों से भी बदत्तर थी। उनका मानसिक स्तर भी बहुत नीचा माना जाता था। स्वामी विवेकानन्द ने स्त्रियों को गुलामी से मुक्ति दिलायी, पर्दे से बाहर किया, सार्वजनिक जीवन में भाग लेने की प्रेरणा दी तथा नारी को शिक्षा ग्रहण करने पर बल दिया। विवेकानन्द कहते है कि यह समझना बहुत कठिन है कि हमारे देश में स्त्रियों और पुरूषों के बीच इतना भेद भाव क्यों कर रखा है। वेदान्त की यह घोषणा है कि सभी प्राणियों में एक ही आत्मा विराजमान है। स्मृतियां आदि सीखकर और स्त्रियों पर कड़े नियमों का बंधन डालकर पुरूषों ने उन्हें अपने चरणों की दासी बना रखा है। अवनति के युग में जब पुरोहितों ने अन्य जातियों का वेदाध्ययन के अयोग्य ठहराया, उसी समय उन्होंने स्त्रियों को भी उनके अधिकारों से वंचित कर दिया था पर वैदिक और औपनिषदिक युग में तो मैत्रेयी और गार्गी आदि पुण्य स्मृति महिलाओं ने ऋषियों का स्थान ले लिया था। सहस्त्र वेदज्ञ ब्राहम्णों की सभा में गार्गी ने याज्ञवल्क्य को ब्रह्म विशय में शास्त्रार्थ करने के लिए ललकारा था'।[13]

स्वामी विवेकानन्द जी स्त्रियों को लौकिक तथा त्याग की शिक्षा देकर सीता बनाने का प्रयत्न करना चाहते थे, ताकि अपनी रक्षा वे स्वयं कर सके।

## जन समूह की शिक्षा का प्रसाद

स्वामी विवेकानन्द का विश्वास था कि वहीं देश उन्नति करता है, उसमें निवास करने वाले लोग जितने अधिक शिक्षित होते है।

भारत वर्ष की पतनावस्था का मुख्य कारण यह रहा है कि मुट्ठी भर लोगों ने देश की सम्पूर्ण शिक्षा तथा बुद्धि पर एकाधिकार कर लिया। यदि हम फिर उन्नति करना चाहते हैं तो हम जन साधारण में शिक्षा का प्रसार करके ही पहले जैसे हो सकते है। निम्न वर्ग के लोगों को अपने खोए हुए व्यक्तित्व का विकास करने के हेतु शिक्षा देना ही उनका एकमात्र सेवा करना है। हम उनके सामने विचारों को रखे। संसार में उनके चारों ओर क्या चल रहा है, इसकी उन्हें जानकारी दे। वे अपनी मुक्ति का कार्य स्वयं कर लेंगे। प्रत्येक राष्ट्र में स्त्री तथा पुरूष को अपनी मुक्ति का कार्य स्वयं करना होगा। उनके सामने विचारों को रखें। बस उन्हें इतनी सहायता चाहिए और शेष सब उसके फलस्वरूप स्वयं हो जायेगा। हमारा कार्य है भिन्न–भिन्न रसायनिक पदार्थों को एक साथ रख देना तथा रखे बनाने का कार्य प्रकृति नियम के द्वारा ही सम्पन्न हो जायेगा।[14]

## दलितों का उद्धार

स्वामी विवेकानन्द दलितों और गरीबों को देखकर बड़े दुःखी होते थे। उन्होंने उनको ऊँचा उठाने के लिए और सहायता देने के लिए अपने देश वासियों तथा अन्य मिशनरियों को प्रेरणा दी। भारत वासियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि ''आओ हममें से प्रत्येक व्यक्ति दिन और रात उन करोड़ों पद दलित भारतीयों के लिए प्रार्थना करे, जो गरीबी, पुरोहितों के छल और नाना अत्याचारों द्वारा जकड़े हुए है। उन्हीं के लिए दिन रात प्रार्थना करो। मैं उच्च और धनिकों की अपेक्षा उनको उपदेश देने की चिंता करता हूँ।''

स्वामी जी ने आगे चलकर कहाः मैं दार्शनिक नहीं हूँ। तत्ववेत्ता नहीं हूँ, कोई संत भी नहीं हूँ। मैं दरिद्र हूँ और दरिद्रों को प्यार करता हूँ। दरिद्रता और अज्ञान के गर्त में सदार से डूबे हुए इन 20 करोड़ नर–नारियों के दुःखों को कौन अनुभव करता है। मैं उसी को महात्मा कहूँगा, जो इने दुःखों का अनुभव करता है। किसके हृदय में उनके दुःखों के लिए टीस होती है? उन्हें न कहीं प्रकाश मिलता है, न शिक्षा। उन्हें प्रकाश कौन देगा? कौन उनको शिक्षा देने के लिए उनके द्वार–द्वार भटकेगा। उन्हीं लोगों को तुम अपना ईश्वर समझो। निरन्तर इनका ध्यान करो। उनके लिए काम करो। उनके निरन्तर प्रार्थना करो। ईश्वर तुम्हें मार्ग दिखलाएगा।[15]

स्वामी विवेकानन्द की सफलता का मुख्य कारण यह था कि उन्होंने पश्चिम में वेदान्त दर्शन की चतुर्कोण समाश्रित (ज्ञान योग, भक्ति योग, राज योग तथा कर्म योग) सार्वजनीन बुद्धि, संश्रित ओर प्रेरणाप्रद व्याख्या की वह आश्चर्यजनक थी। वे जेम्स मैक्समूलर, पॉल डोयसन और रॉयल से मिले तथा आध्यात्मिक अद्वेतवाद की महत्ता पर विचार–विमर्श किया। वे इस बात में विशेष भाग्यशाली थे कि उन्हें पश्चिम में कुछ प्रतिभाशाली तथा निष्ठावान शिष्य मिल गये। उन्हें पश्चिम में भारत के पक्ष में अनुकूल लोकमत का निर्माण करने में सफलता मिली। दूसरी ओर उन्हें शिकागो के सम्मेलन में तथा अन्य स्थानों में जो सफलता उपलब्ध हुई, उससे भारतीय लोकमत आन्दोलित हो गया।[16]

## निष्कर्ष

विवेकानन्द की कृतियों में राजनीतिक चिन्तन की समीक्षा के तहत स्वयं विवेकानन्द ने भिन्न–भिन्न परिस्थितियों तथा घटना क्रम के परिप्रेक्ष्य में किस प्रकार, क्या अभिव्यक्ति की, इस महत्वपूर्ण प्रचार को परखने का प्रयास किया गया है। विवेकानन्द के लेखन, व्याख्या, मूल्यांकन अपेक्षित मात्रा में उपलब्ध है, किन्तु उनकी कृतियों पर केन्द्रित अध्ययन की– चाहे कितने भी परिसीमित हो, किसी भी सुधारवादी एवम् कर्मण्य व्यक्ति का एक विशिष्ट समय संदर्भ होता है एवम् उसी को दृष्टिगत रखकर मूल्यांकन एवम् समीक्षा संभव एवम् सामयिक बन सकते है।

विगत शताब्दी, वर्तमान शताब्दी के कतिपय प्रारम्भिक वर्ष, अंग्रेजी शासन का स्वरूप भारत की तत्कालीन अवस्था में समाज एवम् धर्म विषयक प्रवृत्तियां एवम् संरचना, इन सभी के वृहत परिप्रेक्ष्य में विवेकानन्द के चिन्तन में सुधारवादी दृष्टि, मूल्य, आकांक्षाएं, विकल्प तथा अन्तर दृन्द्ध को परखा जा सकता है।

विवेकानन्द के सामाजिक निष्कर्ष, अगणित संतों और ऋषियों के शाश्वत आध्यात्मिक अनुभवों पर आधारित है। उन्होंने अवयवी विकास, राष्ट्रीय उन्नति तथा मानसिक और आध्यात्मिक स्वतंत्रता पर बल दिया। आज इस समय समन्वय प्रतिपादक व्यापक सामाजिक और

राजनीतिक दर्शन की आवश्यकता है। भौतिक जगत की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। पूँजीवादी शोषण का अंत होना चाहिए और आर्थिक समानता को सामाजिक आदर्श बनाया जाना चाहिए। किन्तु आर्थिक सुरक्षा की प्राप्ति के उपरान्त विश्व की संस्कृति और उसकी आत्मा के अधिक पूर्ण विकास के लिए तथा मानव संबंधों को अधिक समुचित रूप से नैतिक नींव पर स्थापित करने के लिए हमें वेदान्त की उन शिक्षाओं से प्रेरणा लेनी पड़ेगी, जिसके आधुनिक प्रतिपादक स्वामी विवेकानन्द थे।

## संदर्भ ग्रंथ


1 बी.एन.दत्त, *स्वामी विवेकानन्दः पेट्रियाट एण्ड प्रोपेट,* नव भारत पब्लिशर्स, कलकत्ता–1954, पृष्ठ संख्या–100

2 *रोमा–रोला, विवेकानन्द,* लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद, 1974, पृष्ठ–37

3 *THE COMPLIATE WORK OF SWAMI VIVEKANAND* मायावती मेमोरियल संस्करण भाग–1–1936, पृष्ठ–140

4 *THE COMPLIATE WORK OF SWAMI VIVEKANAND* मायावती मेमोरियल संस्करण भाग–1–1936, पृष्ठ–554

5 विवेकानन्द ने कहा था कि सत्यता आन्तरिक ईश्वर की अभिव्यक्ति हुआ करती है। *आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन*– आचार्य डॉ. विश्वनाथ प्रसाद वर्मा लक्ष्मीनारायण अग्रवाल हॉस्पिटल रोड़, आगरा–3, चतुर्थ संपरिवर्धित संस्करण 2000, पृष्ठ–36

6 विवेकानन्द ने कहा था कि सत्यता आन्तरिक ईश्वर की अभिव्यक्ति हुआ करती है। *आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन*– आचार्य डॉ. विश्वनाथ प्रसाद वर्मा लक्ष्मीनारायण अग्रवाल हॉस्पिटल रोड़, आगरा–3, चतुर्थ संपरिवर्धित संस्करण,पृष्ठ–141–42

7 *स्वामी विवेकानन्द जीवनी*– भाग–2, पृष्ठ–573, अल्मौड़ा अद्वेत आश्रम, चतुर्थ संस्करण–1953

8 *स्वामी विवेकानन्द जीवनी*– भाग–2, पृष्ठ–752, अल्मौड़ा अद्वेत आश्रम, चतुर्थ संस्करण–1953

9 टी.एस. अविनाश लिंगम, *स्वामी विवेकानन्द शिक्षा,* पृष्ठ–13, रामकृष्ण आश्रम, धान्तोली, नागपुर 1971

10 *स्वामी विवेकानन्द साहित्य,* खण्ड़–9, पृष्ठ–284, अद्वेत आश्रम, मायावती पिथौरागढ़, हिमालय–1973

11 *स्वामी विवेकानन्द साहित्य,* खण्ड़–10, पृष्ठ–280, अद्वेत आश्रम मायावती पिथौरागढ़, हिमालय–1973

12 *सत्येन्द्र मजूमदारः विवेकानन्द,* पृष्ठ–391, रामकृष्ण आश्रम धान्तोली, नागपुर– 1977

13 टी.एस. अविनाश लिंगम– *विवेकानन्द शिक्षा,* पृष्ठ–40, रामकृष्ण आश्रम, धान्तौली, नागपुर–1971

14 *हे भारत उठो जागो,* पृष्ठ–27, स्वामी विवेकानन्द, रामकष्ण मठ, नागपुर–1997

15 स्वामी विवेकानन्द– *शिक्षा,* पृष्ठ–52–53, रामकृष्ण मठ, नागपुर

16 *विवेकानन्द जीवनी,* जिल्द–2, अल्मौड़ा अद्वेत आश्रम चतुर्थ संस्करण–1953